शिक्षक, शिक्षण संस्थाओं के बी. एड. कार्यक्रम में भावी शिक्षकों में समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं मूल्यों का अध्ययन

A STUDY OF THE ATTITUDE AND VALUES OF PROSPECTIVE TEACHERS OF B.Ed. PROGRAMMES RUN BY TEACHER EDUCATION INSTITUTES (TEIS) TOWARDS INCLUSIVE EDUCATION

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
को पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रारूप
(शिक्षा संकाय)

शोधार्थी
भावना शेखावत

शोध निर्देशक
डॉ. अशोक सेवानी
व्याख्याता

शिक्षा विभाग, जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान अजमेर
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर

2016

Certificate

This is to certify that **Mrs. Bhawna Shekhawat** daughter of Mr. Narpat singh has qualified the course work of Paper-II & III for Registration for the Ph.D. programme in the Department of **Education** of the **Jialal Institute of Education, Ajmer** on ..09/03/17.(date/month/year).

Ph.D. Supervisor

09 March 17
Signature with date
Head of the Department

PRINCIPAL
JIALAL INSTITUTE OF EDUCATION
AJMER

APPENDIX VI

CERTIFICATE BY SUPERVISOR

Certified that :

1 I am willing to guide the research work of Smt. Bhawna Shekhawat on the above subject if he gets registered for Ph.D.

2 To the best of my knowledge the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any university.

3 The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.

4 The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography, etc. submitted by the candidate.

5 I have .5.. research candidate registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application being forwarded for registration is .5..

6 The candidate is not in a close relation.

Signature of the supervisor with date 9.3.17

Certified that the available facilities will be extended to Smt. Bhawna Shekhawat for research work if he registered for Ph.D.

Saneja 09 March 17

Signature of the Principal/

with date

PRINCIPAL
JIALA INSTITUTE OF EDUCATION
AJMER

Saneja 09 March 17

Signature of the Head

Department with date

PRINCIPAL
JIALA INSTITUTE OF EDUCATION
AJMER

अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों में समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं मूल्यों का अध्ययन

A STUDY OF THE ATTITUDE AND VALUES OF PROSPECTIVE TEACHERS OF B.Ed. PROGRAMMES RUN BY TEACHER EDUCATION INSTITUTES (TEIs) TOWARDS INCLUSIVE EDUCATION

विषय सूची

पृ. सं.

4. प्रस्तावना, प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व एवं उद्देश्य
Introduction, Importance of proposed investigation, Objectives
   4.1 प्रस्तावना
   Introduction 2
   4.2 प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व
   Importance of Proposed Investigation 3
   4,3 उद्देश्य
   Objectives. 7
5. प्रस्तावित शोध पर पूर्व में हुए कार्य का पुनरावलोकन
संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन
Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.) 8
6. प्रस्तावित क्षेत्र के शोध अंतराल का अभिज्ञान
Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based on the review) 22
7. मुख्य परिकल्पना
Major Hypothesis 23
8. शोध में प्रयुक्त उपकरण / शोध विधि
Materials and methods/Research Methodology 25
9. संदर्भ ग्रंथ
List of References cited 29

APPENDIX IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Format for Outline of Proposed Research work
(to be supplied in Six copies)

1 Name of Scholar(In English) : Bhawna Shekhawat

(In Hindi) : भावना शेखावत

2. Title of the Research work :

अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों में समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं मूल्यों का अध्ययन

A STUDY OF THE ATTITUDE AND VALUES OF PROSPECTIVE TEACHERS OF B.Ed. PROGRAMMES RUN BY TEACHER EDUCATION INSTITUTES (TEIs) TOWARDS INCLUSIVE EDUCATION

3. Location स्थान

(a) Institution/ Department Where the work is to be done
शिक्षा विभाग, जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान अजमेर

(b) Geographical area of investigation, if any. राजस्थान

4. Introduction, Importance of proposed investigation, Objectives

प्रस्तावना, प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व एवं उद्देश्य

4.1 Introduction
4.2 Importance of Proposed Investigation,
4,3 Objectives.

5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.)
6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based on the review)
7 Major Hypothesis, if any
8. Research Methodology.
9. List of References cited.

भावना 9/3/17

Signature of the Candidate with date

Outline Approved.

Name and Signature of supervisor with date & seal.

(Dr. Ashok Sharma) 9.3.

4. प्रस्तावना, प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व एवं उद्देश्य

Introduction, Importance of proposed investigation, Objectives

4.1 प्रस्तावना

Introduction

परंपरागत रूप से विद्यालयों के स्वरूप में एक ऐसा वातावरण होता है जो शारीरिक और मानसिक रूप से सामान्य स्तर के विद्यार्थी को दृष्टिगत रखते हुए तैयार किया है।

वर्तमान में अलग शिक्षण के स्थान पर सामान्य एवं विशेष आवश्यकता वाले दोनों प्रकार के बालकों को एक ही कक्षा में शिक्षण देने पर बल दिया जा रहा है। इस प्रकार की शिक्षण व्यवस्था को सामान्य संदर्भ में समावेशी शिक्षा के नाम से जाना जाता है। इस व्यवस्था का विवरण निम्नवत् है –

सन् 1998 में थाइलैंड में सम्पन्न हुए जोमेटियन विश्व सम्मेलन में सभी के लिये शिक्षा हेतु लक्ष्य निर्धारित किये गये और यह अनुभव किया गया कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह बच्चा, युवा अथवा प्रौढ़ हो उसे शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा दी जावे जिससे वह अपनी आधारभूत अधिगम आवश्यकताओं को पूरा कर सकने में समर्थ हो सके। इस सम्मेलन के बाद से यूनेस्को एवं अन्य संयुक्त राष्ट्र अभिकरणों के द्वारा कई अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगठन इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए सतत प्रयत्नशील है।

ऐसे विद्यार्थी जो अधिगम एवं विकास की दृष्टि से बाधाग्रस्त हैं, को सामान्य विद्यालयों एवं कक्षाओं में समाविष्ट करना अन्तर्राष्ट्रीय मानव अधिकार आंदोलन का एक अंग है। सन् 2004 से सलमान्का (स्पेन) में यूनेस्कों द्वारा आयोजित विशेष आवश्यकता शिक्षा सम्मेलन में तय किया गया कि विशेष शिक्षा योग्य बालकों को भी आधारभूत शिक्षा का अधिकार प्राप्त होना चाहिए।

क्लार्क एवं अन्य के अनुसार समावेशी शिक्षा का कार्य साधारण विद्यालयों के विषय क्षेत्र को विस्तृत करना है जिससे कि वे विशेष शैक्षिक आवयकताओं वाले बालकों को समाहित कर सके।

उडीटसकी के अनुसार समावेशी शिक्षा सिद्धांतों का एक प्रारूप है जो सुनिश्चित करता है कि विकलांग विद्यार्थी को समुदाय का मूल्यवान एवं आवश्यक सदस्य समझा जाता है।

फारेस्ट एवं पीयरपाइंट के अनुसार समावेशी शिक्षा भिन्नताओं के साथ कार्य करना है।

4.2 प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व

Importance of proposed investigation

विशिष्ट आवश्यकताओं की शिक्षा पर शिक्षा श्वेत पत्र छः समावेशी शिक्षा एवं प्रशिक्षण व्यवस्था का निर्माण (2001) में समावेशी शिक्षा को निम्नांकित पक्षों से सम्बद्ध बताते हुए कहा गया है कि यह शिक्षा –

- यह स्वीकार करती है कि सभी बच्चे एवं युवा सीख सकते हैं तथा सभी बच्चें एवं युवा सहारा चाहते हैं।
- यह स्वीकार करती है कि सभी सीखने वाले किसी न किसी दृष्टि से भिन्न होते हैं तथा उनके सीखने से संबंधित आवश्यकताएं भी भिन्न होती है एवं यह भिन्नता हमारे लिए मूल्यवान है तथा मानवीय अनुभवों का एक सामान्य भाग है।
- सीखने वालों के मध्य अंतर को स्वीकार करते हुए उसका आदर करती है चाहे वह अंतर आयु, लिंग, भाषा, वर्ग एवं अपंगता किसी भी कारण से क्यों न हो।
- सभी सीखने वालों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अभिवृत्तियों, व्यवहार, शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम एवं वातावरण में परिवर्तन करती है।

- संस्कृति एवं शैक्षिक संस्थाओं के पाठ्यक्रमों में सभी सीखने वालों की सहभागिता को बढ़ाने एवं अधिगम के रास्ते में आने वाले अवरोधों को अनावृत करने एवं उन्हें कम करने में सहायता प्रदान करती है।
- व्यक्तिगत सामर्थ्य को बढ़ाकर सीखने वाले विद्यार्थियों की सशक्त बनाने एवं उन्हें अधिगम की प्रक्रिया में तर्कपूर्ण ढंग से सहभागिता करने के योग्य बनाती है।
- विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं और अधिगम बाधा से युक्त सीखने वालों को मुख्यधारा की कक्षाओं में समाविष्ट करना एवं उन्हें अधिकारों के प्रति जागरूक करना इस शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग है।

  ''समावेशित शिक्षा'' यानी इन्स्ल्यूसिव एजुकेशन का विचार इस बढ़ते हुए मतैम्य की प्रतिक्रिया स्वरूप पैदा हुआ है कि सभी बच्चों को उनकी पृष्ठभूमि उपलब्धि और अशक्तता को ध्यान में रखे बगैर अपने ही इलाके में एक समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। **यूनेस्को, डकार, 2000**

कक्षा एक छोटा सा समाज होता है, जहां सभी प्रकार के बच्चे होते हैं, बुद्धिमान, सुस्त, भावात्मक बुद्धिमान, प्रतिभाशाली, मानसिक रूप से अवरूद्ध शारीरिक रूप से अशक्त, धीमा सीखने वाले आदि। यदि हम एक प्रकार का दृष्टिकोण अपनाए तो कक्षा का एक बड़ा भाग वंचित रह जाता है और बाद में पिछड़ जाता है। आजकल अध्यापक समावेशन के मूल्यों को पूरी तरह से समझते हैं क्योंकि उन्हें एक प्रभावी शिक्षा प्रथा के रूप में इसकी शक्ति का अंदाजा है। समावेशित शिक्षा सभी के लिए एक मानव अधिकार का मुद्दा है, यह एक अच्छी शिक्षा है। और इससे एक अच्छी सामाजिक भावना पैदा होती है।

सलमांका वक्तव्य (यूनेस्को, 2004) जो ''सभी के लिए शिक्षा'' के लिए महत्वपूर्ण है, इसमें कहा गया कि प्रत्येक बच्चे को शिक्षा का मूलभूत अधिकार है और उसे अधिकतम का एक स्वीकार्य स्तर प्राप्त करने व उसे बनाए रखने का अवसर दिया जाना चाहिए। इसके अलावा प्रत्येक बच्चे में कुछ खास तरह की विशेषताएं,

रूचि, योग्यता और अध्ययन संबंधी जरूरतें होती हैं। इन विशेषताओं और जरूरतों की विविधता को ध्यान में रखने के लिए शिक्षा पद्धतियां तैयार की जानी चाहिए तथा शैक्षिक कार्यक्रम कार्यान्वित किए जाने चाहिए। इसलिए विशेष शैक्षिक जरूरतों वाले सभी बच्चों की नियमित स्कूलों तक पहुंच होनी चाहिए जो उनकी जरूरतों को पूरा करने हेतु सक्षम एक बाल केन्द्रित अध्यापन व्यवस्था में उन्हें समाविष्ट करें। इसके लिए महत्वहीन समझे गए बच्चों व अन्य समूहों सहित सभी बच्चों के लिए न केवल नियमित स्कूल और नियमित कक्षा कमरों की जरूरत है बल्कि समावेशित शिक्षा को सुविधाजनक बनाने के लिए विद्यमान सेवा पूर्व तथा सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या और अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की समीक्षा करने तथा उसे संशोधित करने की भी आवश्यकता है।

अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों में समावेशित शिक्षा के संप्रत्यय को सम्मिलित किया जाए जिससे भावी अध्यापकों के दृष्टिकोण अभिवृत्ति, मूल्य और उनके व्यक्तित्व में इस शिक्षा के प्रति सकारात्मक विचार उत्पन्न हो सके।

एनसाइकलोपीडिया ऑफ स्पेशल एजुकेशन (2008) के अनुसार समावेशन से स्कूल पद्धतियों में सेवा एकीकरण को भी सुकर बनाया जा सकता है जहां सामान्य और विशेष शिक्षा कार्मिकों को और साथ ही पाठ्यचर्या तथा शिक्षण प्रक्रियाओं को भी, एकीकृत व्यवस्था में छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए शैक्षिक अनुभव तैयार करने के वास्ते मिलाया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ शिक्षकों तथा बाल अधिवक्ताओं ने (लिली 1987, रेनाल्डस, वांग, वेलबर्ग 1987, स्क्रिटिक 1991) कुछ मूलभूत शैक्षिक सुधार करने की वकालत की है। उनका कहना है कि वर्तमान शैक्षिक पद्धति में कुछ छात्रों की कठिनाइयों छात्रों में निहित नहीं होती बल्कि पब्लिक स्कूलों के संगठन में निहित है जहां असफल छात्रों का प्रवेश वर्जित है।

गार्डन और लिसकाई (1997) – एक ऐसी विलयित अथवा एकीकृत शैक्षिक पद्धति के प्रक्षेप के लिए जिसमें शिक्षक सभी छात्रों को पढ़ाने और प्रत्येक छात्र की

सफलता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षण अपनाने की जिम्मेदारी स्वीकार करें, प्रतिमानों में बदलाव से कम की आवश्यकता नहीं है, तथापि शिक्षक शिक्षण कार्यक्रम, अभिवृत्ति निर्माण और समर्थन प्रणाली ऐसे कुछेक महत्वपूर्ण कारक हैं, यदि उनका व्यवस्थित ढंग से समाधान किया जाए तो वे समावेशन नीति को सफल बनाने में महत्वपूर्ण होंगे।

मारा सैपोन – शेविन – ''संसाधनों के बिना, सहायता के बिना, अध्यापक के लिए तैयारी के समय के बिना, प्रतिबद्धता के बिना, एक परिकल्पना विवरण के बिना, पुनर्गठन के बिना, स्टॉफ के विकास के बिना, समावेशन सफल नहीं हो सकता।'' एकीकृत अशक्त शिक्षा परियोजना यूनिसेफ की सहायता से प्रारंभ की गई थी इसके अंतर्गत, अशक्तता वाले बच्चों की विशेष शिक्षकों, साधनों व अन्य पाठ्यसंबंधी विशिष्ट संसाधनों की मदद से साधारण स्कूल में रखने पर बल दिया गया।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन सी एफ (एन सी ई आर टी 2005 अध्याय 04) में कहा गया – ''सिद्धांतों और व्यवहार में, पाठ्यचर्या की योजना से स्कूल में प्रभावी एकीकरण कार्यक्रमों को वास्तविक रूप प्रदान करने का एक सारगर्भित साधन उपलब्ध होता है। ऐसे प्रयासों में बच्चों द्वारा महसूस किए गए असंतुलनों के सुधारों का पालन करने के लिए उपयुक्त शिक्षण उद्देश्यों, विषय वस्तु, सामग्री, पद्धति और शिक्षण अनुभवों के लिए मूल्यांकन के उपायों का पता लगाया जाना चाहिए और उनको अपनाया जाना चाहिए। विशेष जरूरतों वाले सभी शिक्षार्थियों के लिए एक सारगर्भित उपाय के रूप में संकल्पनाओं की सिफारिश की गई है। पाठ्यचर्या आयोजन में, एक नए तथा महत्वपूर्ण कार्यक्रम का सृजन करने में जिससे इसकी सर्वाधिक विशिष्ट परिस्थितियों में पाठ्यचर्याएकीकरण सुविधाजनक होगा, कक्षा सेवाओं के पहलुओं, विशेष सहायता सेवाओं तथा कार्मिकों व सह–पाठ्यचर्या कार्यकलापों को परस्पर जोडा जाना चाहिए।

समावेशी शिक्षा के उपर्युक्त सभी सदर्भों एवं अध्ययनों को चिन्तन प्रक्रिया से गुजरने के बाद शोधार्थी ने यह महसूस किया कि आज **सर्व शिक्षा अभियान** द्वारा सन

2001–2010 के मध्य तक सभी बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के कई कार्य किये हैं। जिससे जाति, धर्म, लिंग, विकलांगता या अक्षमता के आधार पर कोई भेद नहीं किया जाएगा। विशिष्टताओं से युक्त विद्यार्थी अधिगम के लिए आवश्यक शैक्षिक उपकरण, भौतिक सुविधाओं, विद्यालय भवन,शैक्षिक परिस्थितियां आदि उपलब्ध करवाई जा रही है। इसी के साथ विशिष्ट बालकों की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों में समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति और मूल्यों को विकसित करने का प्रयास किया है। क्योंकि केन्द्र एवं राज्य सरकार के सहयोग की 21 वीं सदी के प्रथम दशक में समावेशी शिक्षा के लिए प्रयास किए गए हैं इस अध्ययन के माध्यम से यह पता किया जाएगा कि यह प्रयास भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति व मूल्यों को सकारात्मक रखने में किस स्तर तक सफल रहा है?

4.3 शोध के उद्देश्य

Research Objectives

शोध एक साद्देश्य प्रक्रिया है। प्रत्येक क्षेत्र में शोध कार्यो का नियोजन किया जाता है। वर्तमान शोध के कुछ उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं जो निम्नलिखित हैं –

1 अध्यापक शिक्षा संस्थाओं में बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति और मूल्यों का अध्ययन।

2 सरकारी और गैर सरकारी अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति व मूल्यों की तुलना का अध्ययन।

3 बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की संकाय भिन्नता का उनकी समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन।

4 बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की लिंग भिन्नता का उनकी समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

5 बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों में समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति और मूल्यों के सह संबंध का अध्ययन।

5- प्रस्तावित शोध पर पूर्व में हुए कार्य का पुनरावलोकन संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

Review of work already done on the subject of proposed

प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान होना चाहिए कि पूर्व अनुसंधानों में किस विधि को काम में लिया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या रहे तभी शोधकर्ता उसकी रूपरेखा तैयार कर सकता है। अतः शोधकार्य की सफलता के लिए संबंधित साहित्य का अवलोकन आवश्यक है।

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन स्त्रोतों को सामान्यतया दो वर्गो में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1 **प्रारम्भिक स्त्रोत** – प्रारम्भिक स्त्रोत शोधकर्ता द्वारा किये गये शोध का प्रतिवेदन होता है तथा मूल लेख है अर्थात् जिस व्यक्ति ने तथ्यों को धटते हुए प्रेक्षित किया है उसी के द्वारा तथ्यों का वर्णन प्रारम्भिक स्त्रोत कहलाता है जैसे पूर्व में किए गए शोध प्रबंध, शिलालेख, ताम्रपत्र लेख, राजदरबार लेख, आत्मकथा आदि।

2 **द्वितीयक स्त्रोत** – वे पाठ्यपुस्तकें जिनमें विभिन्न क्षेत्रों में हुए शोध कार्य के परिणामों का सारांश सुसंगठित रूप से प्रस्तुत किया गया है इन्हें द्वितीयक स्त्रोत कहते हैं जैसे – शिक्षा के विश्व ज्ञान कोष, शिक्षा सूची पत्र, शिक्षा सार, जीवनगाथा, शिक्षा अनुसंधान, विभिन्न सर्वे बुक आदि।

समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित अध्ययन

ऊषा (1981) कर्नाटक के शारीरिक विकलांग बच्चों के शिक्षा से संबंधित समस्याओं का अध्ययन किया। जिसमें प्रारंभिक से इंटर मीडिएट कक्षा तक के विद्यालय सम्मिलित थे। विद्यालय एकीकृत शिक्षा प्रणाली के थे जिसमें सामान्य बच्चों की पढ़ाये जाने वाले विषय ही इन्हें पढ़ाये जाते थे। विकलांग बच्चों की प्रमुख समस्याएं थी की शिक्षा प्रणाली का प्रबंध,

कार्यक्षेत्र, प्रकृति, उपकरणों तथा अन्य सुविधाओं का अनियोजित होना। विशेषज्ञों का अभाव ब्रेललिपि में पुस्तकों का अभाव, पाठ्यक्रम की अनुउपलब्धता, शिक्षकों में पर्याप्त प्रशिक्षण का अभाव, विभिन्न विभागों में समन्वय का अभाव, अभिभावक शिक्षा का अभाव।

शर्मा और मुकोपाध्याय (1990) एकीकृत विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं तथा शिक्षण दक्षताओं को ज्ञात करने हेतु शोध अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य एकीकृत शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना तथा विकलांग विद्यार्थियों के सामान्य शिक्षा में सम्मिलित करने हेतु शिक्षकों में सामान्य तथा विशिष्ट दक्षताओं का अध्ययन करना। निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि शिक्षकों की विकलांग विद्यार्थियों के एकीकृत कक्षा शिक्षण में समान अवसर प्रदान करने के संदर्भ में धनात्मक अभिवृत्ति पायी गयी।

आइन्सको (1990) विशेष आवश्यकता वाले बालकों के शिक्षकों के लिए शिक्षण युक्ति के विकास पर अध्ययन किया इस प्रोजेक्ट में यूनेस्को ने तथा अपने साथ सदस्य देशों के सहयोग से विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सामान्य विद्यालय में शिक्षण युक्तियों के विकास हेतु अध्ययन कराना। इस वृहत प्रोजेक्ट के परिणाम स्वरूप कुछ सामान्य से संदेश निकले, जैसे सभी देशों ने मुख्य रूप से माना कि समाज में सभी बच्चों के लिये अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। विकलांग बच्चों का एकीकरण सामान्य विद्यालय में किया जाना चाहिए तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण को उद्देश्य के आधार पर नवीनतम बनाते रहना चाहिए।

क्रेवास्जी (1995) राजस्थान में एकीकृत विद्यालय के शिक्षकों के पुनश्चर्या कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। परिणाम स्वरूप ज्ञात हुआ कि जिस शिक्षक या प्रधान शिक्षकों में पुनश्चर्या कार्यक्रम में प्रशिक्षण लिया उन्होंने स्वीकार किया की इस कार्यक्रम से उनके वर्तनी, व्याकरण तथा

शिक्षण कौशलों में सुधार, विशेष क्रियाओं के संगठन, रूपरेखा बनाने में सफलता, विकलांग बच्चों को व्यावसायिक संबंधी क्रियाओं से अवगत कराने और विकलांग बच्चों हेतु प्रोजेक्ट तैयार करने में निपुणता पुनश्चर्या कार्यक्रम के उपयोगिता एवं प्रभावशीलता के कारण ही आयी।

डोमनास्की (1997) – विकलांग बालकों के विद्यालय के शिक्षकों के सेवापूर्व प्रशिक्षण की प्रभावशीलता ज्ञात करने हेतु शोध अध्ययन किया। परिणाम स्वरूप पाया गया कि शिक्षकों में सेवा पूर्व प्रशिक्षण के द्वारा विकलांग विद्यार्थियों के शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति लायी जा सकती है। सेवापूर्ण प्रशिक्षण से शिक्षकों में क्रियाशीलता और विशिष्ट क्षेत्र में ज्ञान में वृद्धि पायी गयी।

वर्मा (1997) विशिष्ट शिक्षकों की विकलांग बच्चों के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके पृष्ठभूमि संबंधित चरों के प्रभाव का अध्ययन किया। शोध अध्ययन में पाया कि शिक्षकों ने दृष्टिबाधित, मूक बधिर विकलांग बच्चों के सामान्य शिक्षा प्रणाली में एकीकरण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित की जबकि मानसिक विकलांग बच्चों के एकीकरण में प्रति रूम सकारात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित की। सभी शिक्षकों ने अनुभव किया की विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के एकीकरण के लिए शिक्षकों में विकलांगता के प्रकार, पाठ्यक्रम के शैक्षिक निहितार्थ, कौशल, शिक्षण व्यूह आदि सूचनाओं की आवश्यकता है।

बाजमी (2001) – दृष्टिहीन बालकों के विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य संतोष का उनके शिक्षण अधिक्षमता तथा व्यक्तिगत मूल्य से संबंध ज्ञात करने हेतु अध्ययन किया। निष्कर्ष रूप में ज्ञात हुआ कि दृष्टि बाधित बालकों के अक्षम विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य संतोष तथा शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक सहसंबंध पाया गया विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य, संतोष का अनेक धार्मिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य से धनात्मक सार्थक सहसंबंध

पाया गया जबकि आर्थिक मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य तथा शक्ति मूल्य से नकारामक सार्थक सहसंबंध पाया गया। ज्ञानात्मक मूल्य तथा सामाजिक आर्थिक स्तर से सार्थक धनात्मक सहसंबंध तथा आर्थिक मूल्य तथा पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य से सार्थक नकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

अलुर, मिथु (2001) ''कुछ सांस्कृतिक और नैतिक समावेशी शिक्षा के भारत में प्रभाव – एक व्यक्तिगत विचार'' जनरल ऑफ मोरल एजुकेशन पृष्ठ सं 287 से 292।

इस लेख में भारत में व्याप्त कुछ सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षा के बारे में बताया है। भारत में अनेक विविधताएं हैं परंतु शिक्षा को मिलाकर संदर्भ में किया जाना चाहिए। इससे संस्कृति विशिष्ट तथा विकसित हो सकती है। जब सभी लोग एक साथ मिलकर इस क्षेत्र में कार्य करेंगे तभी समावेशी शिक्षा अच्छी तरह से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगी।

काला (2006) ''कारक जो प्रभावित करते हैं – शिक्षक के दृष्टिकोण निशक्तता एवं समावेशी शिक्षा के प्रति मुंबई, भारत में ''डिसटबिलिटी एंड सोसायटी, वॉल्यूम 21, पृ सं. 231 से 242।

अध्ययन में परिवर्तनशील पृष्ठभूमि विशिष्टताएं जैसे – आयु लिंग, आय स्तर, शिक्षा के स्तर में वर्षो के शिक्षण अनुभव से परिचित के साथ एक व्यक्ति जो निःशक्तता के साथ परिवार के एक सदस्य के साथ एक विकलांगता, बारंबारता में निकटता से संपर्क करे और एक व्यक्ति के लिए निःशक्तता प्रभावित लोगों के प्रति दृष्टिकोण के साथ साथ शिक्षकों के प्रति और विकलांग छात्रों का शामिल करने की असमर्थता को नियमित रूप से स्कूल के माध्यम से अध्ययन दे।

माया (2008) अमूर्त रूप प्रदान करने के प्रयास किये जाने के बाद सरकार ने बच्चों के लिए सेवाओं के साथ उसकी असमर्थता इंगित करी सभी के लिए शिक्षा (2003) कार्यक्रम शिक्षा का अधिकार विधेयक (2005) के कार्य योजना में शामिल करने और बच्चों को शिक्षा निर्योग्यता के साथ युवा (आइ इ सी वाई डी 2005) राष्ट्रीय नीति (2006) अवांछित व्यक्तियों के लिए आदि की जांच करने के लिए उनके प्रत्युत्तर दायिता का उल्लेख किया गया है।

शर्मा (2009) दृष्टि अक्षम बालकों के विद्यालय के शिक्षकों के गणित अध्ययन में आने वाली समस्याओं का अध्ययन किया। शोध अध्ययन के परिणाम स्वरूप दृष्टिहीन बच्चों के गणित शिक्षण में आने वाली मुख्य समस्याओं में ब्रेल पुस्तकों, रेखा गणित के यंत्रों तथा टेलर फ्रेम का अभाव पाया गया। पाठ्यक्रम में सुधार के साथ शिक्षकों के लिए अल्पकालीन सेवारत कोर्स को गणित शिक्षण कौशल में दक्षता के लिए आवश्यक माना।

शर्मा मोरी, डेनिस, सोनवालेब, संजीव (2009) ''दृष्टिकोण और चिंताओं के पूर्व सेवा शिक्षकों के साथ संबंध में छात्रों की शामिल करने की असमर्थता पुणे एशिया पेसिफिक जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, वोल्यूम 37, पृ 319–331। अमूर्त दृष्टिकोणों और चिंताओं के पूर्व सेवा शिक्षकों की समावेशी शिक्षा कार्यान्वयन के संबंध में जांच पड़ताल की गई थी। प्रतिभागियों में 480 प्री सेवा में 1 वर्ष में स्नातक (बी एड) के लिए प्रवेश पुणे विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र राज्य में हुआ। प्रतिभागियों के परिणामों में पाया कि कुछ नकारात्मक दृष्टिकोणों और मध्यम वर्ग के संबंध में चिन्ता छात्रों की शामिल करने की असमर्थता के साथ अपने वर्ग के लोगों में उच्च स्तर पर भागीदारों के साथ–साथ शिक्षा (अर्थात स्नातकोत्तर दर्जे) पाये गये जो काफी अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण अपने प्रतिद्वंद्वियों की तुलना में करेगा। मजहबी स्तर पर छात्रों में

विश्वास के साथ शिक्षण निर्योग्यता के साथ सम्बद्ध किया गया था। जैसे–जैसे भागीदारों के साथ विचार विमर्श के परिणाम प्राप्त हो रहे हैं संभव निहितार्थ होंगे और ये परिणाम जिला विश्वविद्यालय एवं नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

स्मिथा एवं आचार्य (2010) – ''विशिष्ट बालकों की शिक्षा के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण।'' इन्होंने अपने अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा के अंतर्गत विशिष्ट बालकों के अध्ययन के लेकर जो दृष्टिकोण शिक्षकों द्वारा अपनाया जा रहा है वह उचित नहीं है। शिक्षकों से यह आशा की जाती है कि वे समय की मांग के अनुसार अपने आपको ढालते हुए चले। अपने ज्ञान में वृद्धि करते हुए समावेशी शिक्षा के अंतर्गत विशिष्ट बालकों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा तभी समावेशी शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है।

मीणा (2011) – अजमेर एवं उदयपुर जिले के उच्च प्रारम्भिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा वातावरण की संस्थिति का तुलनात्मक अध्ययन पर लघु शोध। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि शिक्षकों के लिए सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समावेशी शिक्षा का अवबोध विकसित किया जाए। समावेशी शिक्षा से सम्बद्ध इकाइयों की क्रियात्मक खोजों या अनुसंधानों से उन्हें परिचित करवाए। संस्था प्रधान शिक्षकों के समावेशी शैक्षिक व्यवहार का अवलोकन भी करे।

Pandey, Tyagi (2011), Inclusive Education for Disabled children in India : Need a positive re-thinking Journal of Teacher Education in Developing Nations Vol.I. Every child with disability has right to education, various government's act plan and policies have led to programmes formulation towards inclusive

education so urgent need of providing competencies at various levels for promoting Inclusive education by withdrawing all kinds of barriers.

रेड्डी और पूर्णिमा (2012) – ने मानसिक विकृत बालकों के विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं को ज्ञात करने हेतु अध्ययन किया। शोध के परिणाम से ज्ञात हुआ कि विकलांग बच्चों के विद्यालय के शिक्षकों ने संगठनात्मक तथा नियोजन आयाम में निम्न समस्यायें अनुभव की, शैक्षिक रिकार्ड का अभाव, आधारभूत सुविधाओं की अपर्याप्तता अन्य व्यावसायिक संगठनों के सहयोग का अभाव, अभिभावकों से संबंधित समस्यायें, शिक्षकों के शिक्षण और प्रशिक्षण आयाम में कई समस्याएं अनुभव की गई। मानव शरीर के आधारभूत पक्षों का अपर्याप्त ज्ञान, पाठ्यक्रम को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के अनुरूप संशोधित करने के कौशल का अभाव, नवीन शिक्षण विधियों का अभाव, निर्दशन और परामर्श आयाम पर शिक्षकों ने निम्न समस्याएं अनुभव की, विभिन्न विकलांगता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास के लिये विशेषज्ञों के परामर्श का अभाव।

रेड्डी (2014) विकलांग बालकों के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के भूमिका निष्पादन पर विभिन्न स्वतंत्र चरों जैसे लिंग भिन्नता, आयु, शैक्षिक योग्यता, विशेष प्रशिक्षण, वैवाहिक स्थिति, शिक्षण अनुभव, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा आय के प्रभाव का अध्ययन किया। परिणाम में सभी शिक्षकों में भूमिका निष्पादन का स्तर निम्न पाया गया। शिक्षकों की जाति, शैक्षिक योग्यता, शिक्षण अनुभव का प्रभाव मानसिक विकलांग बच्चों के विद्यालयों के शिक्षकों में भूमिका निष्पादन पर पाया गया।

रेड्डी और सुजातामालिनी (2014) दक्षिण भारत के विकलांग बालकों के विद्यालयों के शिक्षकों के जागरूकता, अभिवृत्ति तथा शिक्षण दक्षता का अध्ययन

करने हेतु शोध किया। अध्ययन के परिणाम में शिक्षकों की जागरूकता का शिक्षकों की विकलांगता के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण दक्षता से सार्थक संबंध पाया गया। विद्यालय की प्रकृति शिक्षण अनुभव आयु, लिंग भिन्नता, शैक्षिक योग्यता और विशिष्ट प्रशिक्षण का शिक्षकों के जागरूकता, शिक्षण दक्षता, तथा अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

रघुनाथम (2015) ने दृष्टिबाधित बच्चों को पढ़ाने वाले शिक्षकों की जागरूकता, अभिवृत्ति तथा दक्षता को ज्ञात करने हेतु शोध अध्ययन किया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि अभिवृत्ति तथा जागरूकता में धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया, जागरूकता और दक्षता में धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया तथा अभिवृत्ति तथा दक्षता में भी सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

शिक्षकों के मूल्यों से संबंधित शोध अध्ययन

कौल (1974) – कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के लोकप्रिय तथा अलोकप्रिय शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों का अध्ययन किया। प्राप्त परिणाम में लोकप्रिय अध्यापकों ने अलोकप्रिय अध्यापकों की अपेक्षा आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य को कम तथा सैद्धांतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य और धार्मिक मूल्य पर अधिक अंक प्राप्त किया।

शर्मा (1977) – विद्यार्थियों और शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि – विद्यार्थियों और शिक्षकों के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और नैतिक मूल्यों में सार्थक भिन्नता नहीं है। महिला शिक्षकों की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों का सामाजिक, राजनैतिक और नैतिक मूल्यों में प्राप्तांकों का मध्यमान कम है।

पटेल (1979) – माध्यमिक विद्यालय के महिला और पुरूष शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन किया। गुजरात के चार जिलों से 500 शिक्षकों का चयन किया गया। अध्ययन के परिणाम से ज्ञात हुआ कि धार्मिक मूल्य और सौन्दर्यात्मक मूल्य को महिला शिक्षकों ने पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक प्रारम्भिकता दी। जबकि पुरूष शिक्षकों ने राजनैतिक मूल्यों को महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक प्रारम्भिकता दी।

मुथा (1980) – प्रभावशाली तथा अप्रभावशाली माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मूल्यों के अध्ययन में पाया कि प्रभावशाली शिक्षकों ने अप्रभावशाली शिक्षकों की अपेक्षा सैद्धांतिक मूल्य पर अधिक अंक प्राप्त किया जबकि अप्रभावशाली शिक्षकों ने प्रभावशाली शिक्षकों की अपेक्षा राजनैतिक मूल्य पर अधिक अंक प्राप्त किया।

शर्मा (1981) – ने प्रारम्भिक, माध्यमिक और महाविद्यालय शिक्षकों के आत्म संप्रत्यय, व्यक्तिगत समायोजन और मूल्यों का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि –

1 ग्रामीण की अपेक्षा शहरी शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक है।

2 माध्यमिक शिक्षकों की अपेक्षा महाविद्यालय शिक्षकों में पलायन करने की प्रवृत्ति अधिक है।

3 प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षकों की अपेक्षा महाविद्यालय शिक्षकों की संवेदनशीलता कम है।

4 प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षकों को संवेदनीलता में अंतर नहीं है।

क्लेमेन्से और मैरी (1989) – ने शिक्षकों के कृत्य संतोष और मूल्यों में सहसंबंध ज्ञात करने हेतु शोध अध्ययन किया। न्यादर्श में बैंगलोर के हाई स्कूल के 250 महिला शिक्षकों का चयन किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणाम में सामाजिक मूल्य का सार्थक प्रभाव शिक्षिकाओं के कृत्य

संतोष पर पाया गया। सामाजिक मूल्य पर मध्यम अंक प्राप्त करने वाली शिक्षिकाएं, सामाजिक मूल्य पर अधिक और कम अंक प्राप्त करने वाली शिक्षिकाओं से अधिक कृत्य असंतुष्ट पायी गयी।

सिंह (1990) – विद्यालय शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

कुमारी (1996) – शिक्षकों के मूल्यों तथा अभिवृत्ति का अध्ययन किया। शोध अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि प्रगतिशील तथा व्यावसायिक अभिवृत्ति वाले शिक्षकों ने मानवतावादी मूल्य, परंपरागत मूल्य तथा सामाजिक मूल्य के प्रति रूचि प्रदर्शित की तथा शैक्षिक पक्षों के प्रति भी धनात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित किया।

गुप्ता (2000) – छात्रों के मूल्यों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि – शिक्षित व अशिक्षित छात्रों के मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

दीवान (2001) – छात्र अध्यापकों की क्षमता, अभिवृत्ति, सहभागिता और मानवीय मूल्यों के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि के भविष्य वक्ताओं का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि शहरी छात्र अध्यापक, ग्रामीण छात्र अध्यापकों की तुलना में सभी चरों में बेहतर पाये गये।

चिनारा (2002) – किशोरों में सात प्रजातांत्रिक मूल्यों के विकास हेतु दो व्यूह रचना का पता लगाया और पाया कि आत्म नियंत्रण और स्पष्ट प्रत्युत्तर विभिन्न मूल्यों के विकास में विभिन्न प्रकार से प्रभावित करती है।

सिंह (2002) – शिक्षक प्रशिक्षणकर्ता के कृत्य संतोष का मूल्यों से संबंध ज्ञात करने हेतु शोध अध्ययन किया। 250 शिक्षक प्रशिक्षणकर्ता का चयन पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ विश्वविद्यालय, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर तथा पटीयाला विश्वविद्यालय से किया गया। निष्कर्ष में

सामाजिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, आनंद मूल्य तथा शक्ति मूल्य का कृत्य संतोष से सार्थक नकारात्मक सहसंबंध पाया गया और सौन्दर्यात्मक मूल्य का कृत्य संतोष से सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

कुकरेती और अन्य (2005) – शिक्षण दक्ष शिक्षक, शिक्षण अदक्ष शिक्षकों तथा पुरूष और महिला शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन किया। राजस्थान के बसवारा जिले से 300 शिक्षकों का चयन किया गया अध्ययन से प्राप्त परिणाम में शिक्षण दक्ष और शिक्षण अदक्ष शिक्षकों के धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य और सौन्दर्यात्मक मूल्य में समानता पायी गयी है। शिक्षण दक्ष और शिक्षण अदक्ष पुरूष शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य और मानवीय मूल्य में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। शिक्षण दक्ष महिला शिक्षकों ने शिक्षण अदक्ष महिला शिक्षकों से सृजनात्मक मूल्य, मानवीय मूल्य और धार्मिक मूल्य पर उच्च अंक प्राप्त किया। जबकि आर्थिक मूल्य और राजनैतिक मूल्य पर शिक्षण अदक्ष शिक्षकों ने शिक्षण दक्ष शिक्षकों से अधिक अंक प्राप्त किया।

जयन्थी और अग्रवाल (2006) अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों के सामाजिक, भावात्मक, कक्षा कक्ष वातावरण और उनके प्रजातांत्रिक, सौन्दर्यात्मक मूल्यों में संबंध तो है लेकिन सार्थक नहीं है।

कुमार (2007) पुरूष तथा महिला छात्राध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन किया। शोध अध्ययन में पाया कि महिला छात्राध्यापकों ने ज्ञानात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य में पुरूष छात्राध्यापकों से उच्च अंक प्राप्त किया। जबकि पुरूष छात्राध्यापकों ने महिला छात्राध्यापकों से सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा आर्थिक मूल्य पर उच्च अंक प्राप्त किया।

पोखराना (2008) – किशोरों के मूल्यों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि अनुसूचित जनजाति एवं गैर अनुसूचित जनजाति के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

सिंह (2010) – विकलांग विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व, मूल्यों शिक्षण अभिक्षमता और कृत्य संतोष का अध्ययन किया निष्कर्ष रूप में पाया कि सरकारी विशिष्ट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का कृत्य संतोष, गैर सरकारी की अपेक्षा अधिक पाया गया। महिला और पुरूष शिक्षकों के लोकतांत्रिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य तथा शक्ति मूल्य में सार्थक भिन्नता पायी गयी। धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

गोस्वामी (2012) – गुजरात के पोस्ट बेसिक विद्यालयों में विद्यार्थियों और शिक्षकों के विभिन्न प्रकार के मूल्यों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि – साधारण विद्यालयों की अपेक्षा पोस्ट बेसिक विद्यालयों के शिक्षकों के सैद्धांतिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्य उच्च हैं साथ ही आर्थिक, सौन्दर्यात्मक और राजनैतिक मूल्य भी उच्च पाये गये ।

सिंह (2012) – माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के कृत्य संतोष तथा मूल्यों का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में महिला शिक्षक, पुरूष शिक्षकों के अपेक्षा अधिक कृत्य संतुष्टी पायी गयी। पुरूष शिक्षकों ने महिला शिक्षकों के अपेक्षा धार्मिक मूल्य पर उच्च अंक प्राप्त किया। जबकि सौन्दर्यात्मक मूल्य पर महिला एवं पुरूष शिक्षकों में सार्थक अंतर, नहीं पाया गया। शैक्षिक मूल्य पर पुरूष शिक्षकों ने अधिक अंक प्राप्त किया तो महिला शिक्षकों ने शारीरिक मूल्य पर अधिक अंक प्राप्त किया।

सिंह (2012) – माध्यमिक शिक्षा के प्रशिक्षणरत अध्यापक के मूल्य अवस्थिति में मूल्य परिष्कृत योजना की प्रभाविकता का अध्ययन किया और निष्कर्ष

निकाला कि प्रशिक्षण व्यवसाय के सहयोग एवं समर्पण के लिए मूल्य अवस्थिति और ज्ञान के बीच स्पष्ट संबंध प्राप्त हुआ।

नाकुम (2012) – माध्यमिक विद्यालय के छात्राध्यापकों में मूल्यों का अध्ययन किया। न्यादर्श में 525 छात्राध्यापकों का चयन आठ प्रशिक्षण महाविद्यालयों में किया गया। शोध अध्ययन में पाया गया कि सभी छात्राध्यापकों ने पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य, स्वास्थ्य मूल्य तथा आनंद मूल्य पर उच्च अंक प्राप्त किये। लोकतांत्रिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, शक्ति मूल्य और सामाजिक मूल्य में मध्यम अंक प्राप्त किये। जबकि आर्थिक मूल्य सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा ज्ञानात्मक मूल्य पर निम्न अंक प्राप्त किये।लिंग भिन्नता का उनके आर्थिक मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

विजयलक्ष्मी जी (2012)– अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि विद्यालय के विद्यार्थियों में मूल्य विकसित करने के बारे में ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के विचार सार्थक रूप से भिन्न हैं।

रावत (2013) – माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कृत्य संतोष का मूल्यों से सहसंबंध का अध्ययन किया। जिसके लिये बरेली में 569 शिक्षकों का चयन माध्यमिक विद्यालय से किया गया। शोध अध्ययन में सरकारी विद्यालय में महिला शिक्षकों का कृत्य संतोष, गैर सरकारी पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया। लिंग भिन्नता तथा विद्यालय के प्रबंधन का शिक्षकों के मूल्यों पर बहुत ही कम प्रभाव पाया गया। कृत्य संतोष का शिक्षकों के मानवीय मूल्य, सृजनातमक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य में धनात्मक सहसंबंध पाया गया। राजनैतिक मूल्य और आर्थिक मूल्य का कृत्य संतोष से नकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

शर्मा (2013) – अध्यापकों की राष्ट्र के प्रति अभिवृत्ति के संदर्भ में सामाजिक आर्थिक प्रतिष्ठा एवं मूल्यों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि मूल्य राष्ट्र के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित है।

राव इंदुमति (2015)– विकलांगजन : शैक्षिक अधिकार व अवसरों का उन्नयन'' कुरूक्षेत्र, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार मई 2015 में बताया कि शिक्षा क्षेत्र का दायरा लगातार बढ़ाने के लिए भिन्न प्रयास हो रहे हैं लेकिन जब बात विकलांगजनों एवं विकलांग बच्चों को शिक्षा देने की आती है तब सरकार की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है।हालांकि सरकार द्वारा कई तरह के शिक्षा अभियान चलाए जा रहे हैं।

मल्होत्रा, अचल (2016) – समावेशी विकास और दूरगामी परिणाम का राजनय, तरक्की भारत की, वैश्विक परिदृश्य, योजना, जून 2016 में देश में समावेशी विकास हेतु कूटनीति बुनियादी ढांचा और वित्त पर चर्चा की एवं कहा कि भारत समावेशी विकास के लिए परस्पर प्रयासरत है। इस प्रयास को मजबूती देने के लिये भारत अपने पड़ोसी देशों एवं शेष विश्व से लगातार संबंध बेहतर करने के प्रयास कर रहा है। भारत की कूटनीति का ही प्रयास है कि उसे बहुपक्षीय सहयोग मिल रहा है। कुल मिलाकर राजनय इस रवैये के साथ आगे बढ़ रहा है कि समावेशी विकास के भारत के एजेंडे के साथ अन्य देश भी तालमेल कर सकें।

अखिलेश पाठक (2016) – ''सुगम्य भारत अभियान : निर्बाध वातावरण और सशक्तिकरण की राह'' योजना मई 2016 में बताया कि सरकार एक ऐसी समावेशी समाज परिकल्पना करती है, जिसमें विकलांगों की उत्पादक, सुरक्षित और गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए, उनके प्रगति और विकास हेतु समान अवसर और सुगम्यता प्रदान की जाती हो। इस दृष्टि को मूर्त रूप देने के लिए, दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारिता

विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने सुगम्य भारत अभियान का शुभारंभ किया है।

सू डेसमंड हैलमेन (2016), (बिल गेट्स की सीईओ) ''भारत में कुपोषण'' द टाइम्स आफॅ इंडिया, करेंट अफेयर्स, 07–10–2016 में बताया कि केवल भारत में ही प्रतिदिन 3000 बच्चे कुपोषण से किसी न किसी कारण ग्रसित हो जाते हैं। उपयुक्त भोजन एवं पोषण न मिल पाने के कारण उनके शरीर और दिमाग को काफी हानि पहुंच चुकी होती है। वे पढ़ाई नहीं कर पाते और जल्दी ही जीविकोपार्जन में लग जाते हैं। कुपोषण के हमारे बहुत से नौजवान अपने बराबर के स्वस्थ नौजवानों की तुलना में पीछे रह जाते हैं। ऐसा होने पर गरीबी का चक्र चलता ही जाता है।

6. प्रस्तावित क्षेत्र के शोध अंतराल का अभिज्ञान

Research gaps identified in the proposed field of investigation

संबंधित शोध साहित्य के सर्वेक्षणोपरांत स्पष्ट होता है कि इस स्तर पर शोध अध्ययनों की संख्या कम है। अधिकांश शोध अध्यापक व्यवसाय तथा शिक्षक शिक्षा के अन्य क्षेत्रों जैसे अध्यापक की व्यवसायिक दक्षता, शिक्षकों की प्रभावशीलता, अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति शिक्षण विधियों का प्रभाव तथा शिक्षक सहायक सामग्री की उपयोगिता आदि के संदर्भ में किए गए हैं।

प्राचीन समय से विद्यालयों के स्वरूप में एक ऐसा वातावरण होता है जो शारीरिक और मानसिक रूप से सामान्य स्तर के विद्यार्थी को दृष्टिगत रखते हुए तैयार किया जाता है। लेकिन वर्तमान में समावेशी शिक्षा का प्रचलन सरकारी प्रयासों से, निजी संस्थाओं के योगदान से लोगों की जागरूकता से प्रचलन में आने लग गया है। वर्तमान में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अलग से विद्यालयों की व्यवस्था की गई है लेकिन हल्की और कम विकलांगता वाले बच्चों के लिए विशेष विद्यालय आवश्यक नहीं है। उनका मानसिक स्तर और सीखने की ललक अन्य बच्चों की तरह

ही है। हर बच्चे की योग्यता का पता लगाकर उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ रहने पर दूसरे बच्चों में सकारात्मक सोच उत्पन्न होती है। अतः इन्हें शिक्षा की मुख्यधारा में सम्मिलित करने का सुअवसर प्रदान किया जाता है । क्योंकि आज सभी शैक्षिक सरकारी कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य सभी को शिक्षा का अधिकार देना है।

संबंधित विषय में जितने भी शोध कार्य हुए हैं उनमें पुनरावलोकन में ऐसा शोध कार्य नहीं मिला जिसमें अध्यापक शिक्षा संस्थानों के बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति और मूल्यों का अध्ययन किया गया है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने भावी शिक्षकों में प्रशिक्षण के दौरान समावेशित शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति और मूल्यों को जानने का प्रयास किया तथा भावी शिक्षकों व प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किये जाने कि दिशा में ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करते हुए उपर्युक्त शोध समस्या का चुनाव किया है जिससे निःशक्त व्यक्ति अधिनियम 1995, (शिक्षा का अधिकार एक्ट 2005) राष्ट्रीय विकलांग जन नीति 2006, निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम 2010, सर्व शिक्षा अभियान 2001–2010 आदि सभी के उद्देश्यों के अनुसार सभी बालकों की सामान्य शिक्षा कि मुख्य धारा से जोड़ते हुए समावेशित शिक्षा देने का प्रयास किया जा सकेगा।

7. मुख्य परिकल्पना

Major Hypothesis

जो तथ्य ज्ञात है या जिनको अनुसंधानकर्ता ने निर्धारित किया है उनका परीक्षण करने तथा तर्क संगत परिणाम प्राप्त करने हेतु परिकल्पना का निर्माण आवश्यक है। परिकल्पना, शोध प्रक्रिया, न्यादर्श आदि के चयन का आधार प्रदान करके अनुसंधान के क्षेत्र को नियंत्रित करती है –

1 अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2 अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की समावेशित शिक्षा के प्रति मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3 सरकारी और गैर सरकारी अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

4 सरकारी और गैर सरकारी अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की समावेशित शिक्षा के प्रति मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

5 बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की संकाय भिन्नता का उनकी समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6 बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की संकाय भिन्नता का उनकी समावेशित शिक्षा के प्रति मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7 बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की लिंग भिन्नता का उनकी समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8 बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की लिंग भिन्नता का उनकी समावेशित शिक्षा के प्रति मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

9 बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों में समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के सहसंबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

10 बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों में समावेशित शिक्षा के प्रति मूल्यों के सहसंबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8. शोध में प्रयुक्त उपकरण/शोध विधि –

Materials and methods/Research Methodology

विधि – अनुसंधानकार्य में प्रक्रिया एवं उसका अनुमान निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की दृष्टि में अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुसंधान समस्या की सफलता उसकी अध्ययन प्रक्रिया पर निर्भर करती है।

प्रस्तुत शोध समस्या की प्रकृति वर्णात्मक है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण अध्ययन विधि को अपनाया जाएगा।

उपकरण –

अनुसंधानकर्ता को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शोध समस्या से संबंधित आंकड़ों की आवश्यकता होती है। इन आंकड़ों को प्राप्त करने के लिए उपकरणों (साधनों) का उपयोग किया जाएगा।

प्रस्तुत अध्ययन में मानकीकृत एवं स्वनिर्मित परीक्षणों का उपयोग किया जाएगा–

1 समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्रमापनी
(शोधकर्ता द्वारा निर्मित)

2 व्यक्तिगत मूल्य मापनी
(जी पी शेरी एवं आर पी वर्मा द्वारा निर्मित)

समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

अनुसंधानकर्ता द्वारा समावेशित शिक्षा विषय के विभिन्न पक्षों से संबंधित एवं भावी शिक्षकों की इसके प्रति अभिवृत्ति से संबंधित सामग्री का अध्ययन करके और शोध पर्यवेक्षक से परिचर्चा करके अनुसूची का निर्माण किया जाएगा।

व्यक्तिगत मूल्य मापनी–

प्रस्तुत अध्ययन में मूल्यों के मापन हेतु जे. पी. शेरी तथा आर. पी. वर्मा द्वारा विकसित व मानकीकृत व्यक्तिगत मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया है। यह परीक्षण सभी क्षेत्र के व्यक्तियों के मूल्यों का मापन करने में सक्षम है। इसमें धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, आनंद मूल्य, शक्ति मूल्य, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य, स्वास्थ्य मूल्य नामक दस प्रमुख मूल्यों को सम्मिलित किया गया है।

शोध न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख कार्य क्षेत्र राजस्थान राज्य है। अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी. एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों को सम्मिलित किया जाएगा।

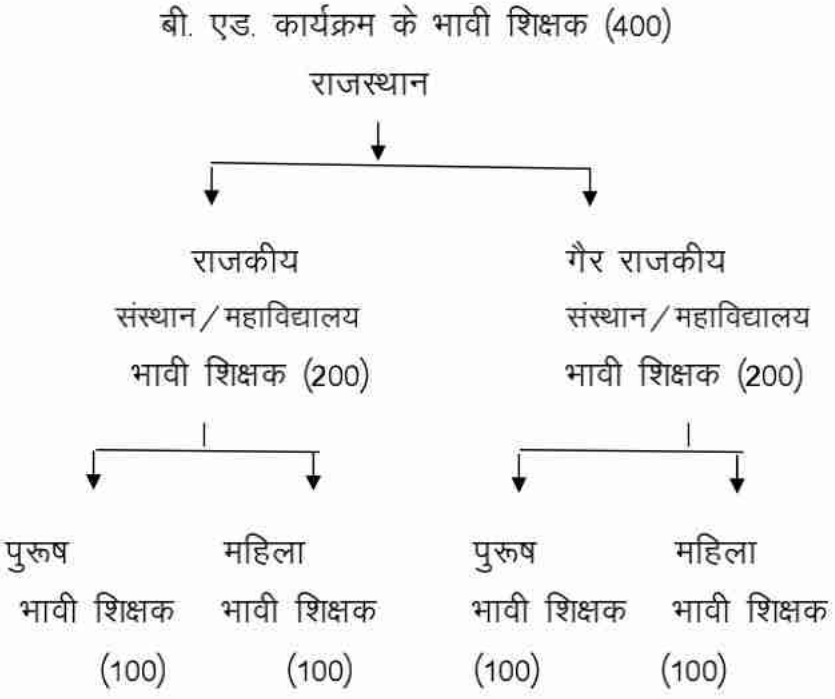

अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी. एड. कार्यक्रम के 400 भावी शिक्षकों का चयन किया जाएगा। जिसमें 200 राजकीय एवम 200 गैर राजकीय संस्थानों/महाविद्यालयों

के भावी शिक्षक होंगे जिसमें 100 महिला 100 पुरूष भावी शिक्षक लिए जाएंगे। उपर्युक्त प्रणाली की सहायता से आंकड़े एकत्रित किए जाएंगे।

सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्यन में उद्देश्यों की प्रकृति के अनुसार मध्यमान, प्रमाप विचलन, एफ अनुपात (अनोवा) का प्रयोग किया जाएगा।

शोध अध्यायों की प्रस्तावित योजना

Chapterwise details of Proposed research

1. समस्या की पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना

1.2 शोध की आवश्यकता एवं महत्व

1.3 समस्या कथन

1.4 शोध के उद्देश्य

1.5 अध्ययन की परिकल्पनाएं

1.6 अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली (परिभाषीकरण)

1.6.1 अध्यापक शिक्षा संस्थान /महाविद्यालय

1.6.2 बी.एड. कार्यक्रम

1.6.3 समावेशित शिक्षा

1.6.4 अभिवृत्ति

1.6.5 मूल्य

1.7 अध्ययन का परिसीमांकन

1.8 अध्याय सारांश

2. संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 संबंधित शोध साहित्य का अर्थ

2.3 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का महत्व/आवश्यकता

2.4 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन के उद्देश्य

2.5 प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित शोध कार्य

2.5.1 समावेशित शिक्षा की अभिवृत्ति से संबंधित अध्ययन अभिवृत्ति

2.5.2 मूल्यों से संबंधित अध्ययन

2.6 संबंधित साहित्य के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

2.7 अध्याय सारांश

3. शैक्षिक अनुसधान की प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना

3.2 अनुसंधान विधि

3.2.1 विधि के उद्देश्य

3.2.2 सर्वेक्षण विधि की विशेषताएं

3.2.3 सर्वेक्षण विधि का महत्व

3.2.4 सर्वेक्षण विधि के सोपान

3.3 शोध न्यादर्श

3.3.1 न्यादर्श का अर्थ

3.3.2 न्यादर्श की विशेषता

3.3.3 न्यादर्श में दत्त संकलन के विद्यालयों का विवरण

3.4 प्रयुक्त शोध उपकरण

3.5 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

3.6 अध्ययन सारांश

4 आंकड़ों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

5 शोध निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

5.2 प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

5.3 प्रस्तुत अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव

5.5 अध्याय सारांश

6. संदर्भ ग्रंथ सूची Biliography /List of References cited

- मिधु, अथुर (2001) – ''कुछ सांस्कृतिक और नैतिक समावेशी शिक्षा के भारतीय प्रभाव – एक व्यक्तिगत विचार '' जर्नल ऑफ मोरल एजुकेशन पृष्ठ संख्या 287 से 292।
- बाजमी, एफ डी (2001) – ए स्टडी ऑफ जॉब सैटीस्फैक्शन इन रिलेशन टू टीचिंग एटटीटयूड एंड पर्सनल वैल्येज आफ टीचर्स इन द स्कूल्स फार द विजुवली डिस्एबिल्ड, अप्रकाशित शोध गंथ, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, अलीगढ़।
- कल्याणपुर, माया (2008) ''भारत में समावेशी शिक्षा की गुणवत्ता और मात्रा : चुनौतियों का सामना करने में सेवा को मिलाकर शिक्षा नीति और प्रावधान'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्क्लयूसिव एजुकेशन, वॉल्यूम 12, पृ सं 243 से 262।
- कुकरेटी, बी. आर. सक्सेना, एम के एवं गिहर, एस (2005) – वेल्यूज एंड टीचर कोम्पेटेनशी ए कोरिलेशनल स्टडी, जर्नल ऑफ आल इंडिया एसोसियेशन फार एजुकेशनल रिसर्च, 17 (3,4), सितंबर–दिसंबर ।
- क्लेमेन्से, एस एम (1989)ए 3X3 एनोवा ऑफ जॉब सेटीस्फेकशन एमंग हाई स्कूल वोमेन टीचर वाई देयर रोल कानफल्किट एंड डाइमेनसन ऑफ वैल्यु. शिक्षा में एम फिल बैंगलोर विश्वविद्यालय, बुच, एम बी. फिफथ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, द्वितीय खंड में नई दिल्ली : एन सी ई आर टी।
- कौल, एस (1974) फैक्टोरियल स्टडी आफ द डिफरेन्सीयेसन वैल्यु ऑफ पापूलर टीचर्स शिक्षा में पी एच डी कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, बुच एम बी, थर्ड सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली : एन सी ई आर टी।

- कुमारी ए बी (1996) वैल्यु ओरियेन्टेशन ऑफ सैकेण्डरी स्कूल टीचर्स एंड देयर एटीटयूडस टुवर्ड एजुकेशनल इश्युज, ओसमानिया विश्वविद्यालय, शिक्षा में पी एच डी बुच, एम बी सिक्स सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, द्वितीय खंड में, नई दिल्लीः एन सी ई आर टी.।
- कुमार, ए. (2007) जेंडर डिफरेनसेज इन वैल्युज ऑफ स्टुडेंटस टीचर्स, जर्नल ऑफ एजूकेशनल स्टडीज 3(1), 35–38।
- क्रेवास्जी (1995) ''राजस्थान में एकीकृत विद्यालय के शिक्षकों के पुनश्चर्या कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन''
- गोस्वामी एन. एस. (2012) ए स्टेडी आफ वैल्यू ओरियन्टेशन ऑफ पोस्ट बेसिक स्कूल इन गुजरात' पी एच डी इन एज्यूकेशन, एच पी यूनिवर्सिटी फोर्थ (1) सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन, एम बी बुच पेज 150।
- गुप्ता शोभा (2013), ए कम्पेरेटिव स्टेडी ऑफ लिटरेज एंड अनलिटरेट स्टूडेंटस इन रिलेशन टू देअर पर्सनल्टी इंटेलीजेंसी वैल्यूज सोशो इकोनोमिक स्टेटस एंड देअर एटिटयूड टूवर्डस देअर टीचर्स'' पी एच डी इन एज्यूकेशन मोहन लाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
- डोमनास्की, सी ए (1997), एप्टीटयूड ऑफ प्री सर्विस जर्नल टीचर्स रिगर्डिंग इन्कलूजन ऑफ लर्नर्स विद डिस्एबिल्टिीज इन रेगुलर एजुकेशन, डिजर्टेशन एब्सट्रेक्ट इंटरनेशनल इन (10) 47324 ए।
- आइन्सका, मेल (1990) स्पेशल नीड इन द क्लासरूम द डिवलपमेंट ऑफ ए टीचर एजुकेशन रिर्सोस पैक, कैलरीज इन्स्टीटयूट ऑफ एजूकेशन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन 5 (1) 19–25।
- मुकोपाध्याय, एस एवं शर्मा, यू (1990) – आइडेन्टिफाइग टीचिंग कौम्पेटेनसीज स्पेशीफिक्ली फार इन्टीग्रेटेड एजुकेशन ऑफ व डिस्एबल्ड, बुच एम बी फिफथ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च इन एजुकेशन, द्वितीय खंड में नई दिल्ली : एन सी ई आर टी।

- मुथा, डी एन (1988) एन एटीटयूशनल एंड पर्सनाल्टी स्टडी ऑफ एफैक्टिव टीचर, मनोविज्ञान में पी एच डी, बुच एम बी थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च, इन एजूकेशन, नई दिल्ली : एन सी ई आर टी।
- नाकुम जी सी (2012) ए स्टडी ऑफ द एक्जेस्टिंग वैल्यु पेटर्न ऑफ सेकेण्डरी टीचर ट्रेनिंग ऑफ सोराष्ट्र शिक्षा में पी एच डी सौराष्ट्र, शिक्षा में पी एच डी सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, बुच एम बी, फिफथ सर्वे आफ रिसर्च, इन एजुकेशन, द्वितीय खंड में नई दिल्ली : एन सी ई आर टी।
- पटेल सी के (1992) ए स्टडी ऑफ द प्रीवेलेंट वैल्यु सिस्टम ऑफ द सैकेण्डरी टीचर्स आफ द हाई स्कूल ऑफ साउथ गुजरात, शिक्षा में पी एच डी, दक्षिणी गुजरात विश्वविद्यालय, बुच एम बी, थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली : एन सी ई आर टी।
- रेडडी जी एल (2014) रोल परफार्मेन्स ऑफ स्पेशल एजुकेशन टीचर, एन सी ई आर टी की शोध परियोजना, अलगप्पा विश्वविद्यालय, कारांकुडी।
- रावत, एस (2013) ए स्टडी ऑफ एक्सपैक्टेशन एंड रियलिटीज ऑफ जॉब सैटीस्फैक्शन एंड वैल्यु पैर्टन आफॅ सेकेण्डरी स्कूल टीचर इन रिलेशन टू देयर सेक्स, शिक्षा में पी एच डी, रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बुच एम बी फिफथ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, द्वितीय खंड में, नई दिल्ली : एन सी ई आर टी।
- रेडडी जी एल एवं पूर्णिमा आर (2012) प्राबलम्स फेशसड बाई स्पेशल एजुकेशन टीचर्स ऑफ मेन्टली रिटार्डेड चिल्ड्रेन, डिस्एबिल्टीज एंड इम्पेयर्मेन्टस, 22(2) 11–119।
- रेडडी जी एल (2004) – अवेयर्नेस एटीट्यूडस एंड कौम्पेटेनशीज रिक्वायर्ड फार स्पेशल एंड नार्मल स्कूल टीचर्स इन डिलिंग चिल्ड्रन विद डिस्एबिल्टिज मिनिस्ट्री ऑफ सोशल जस्टिस एंड पम्पावर्मेन्ट, गौरमेंट ऑफ इंडिया द्वारा अनुदानित वृहत् शोध परियोजना, शिक्षा शास्त्र विभाग, अलगप्पा

विश्वविद्यालय, काराकुंडी राव एल जी (सपां.) पर्सपेक्टिव आन स्पेशल एजुकेशन, नई दिल्ली : नीलकमल पब्लिकेशनस।

- रघुनाथम, एम. (2015) – अवेयर्नस, एटीटयूड एंड कोम्पेटेनशीज रिवाईवड वाई द टीचर्स इन डिलिंग विद लो विजिन चिल्ड्रन एट द प्राइमरी स्टेज, शिक्षा में पी एच डी अलगप्पा विश्वविद्यालय काराकुंडी, इंडियन एजुकेशनल एबसट्रेक्ट, 2006, 50–51।
- सिंह एच एल (1994) मेजरमेंट आफ टीचर वैल्यु एंड देयर रिलेशनशीप टीचियंग एटीटयूड एंड जॉब सेटीस्फेकशन, शिक्षा में पी. एच. डी. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बुच, एम बी. सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन नई दिल्ली, एन सी ई आर टी।
- सिंह ए (2012) माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के व्यावसायिक संतोष तथा मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध ग्रंथ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- शर्मा, वी एस (2009) – प्राबलमस ऑफ मेथमैटिक्स टीचर्स विद विजुवली इम्पेयर्ड चिल्ड्रन, डिस्एबलटीज एंड इम्पेयर्मेन्ट, 23 (2)।
- शर्मा, आर.एन. (1997), एजुकेशनल रिहबिलिटेशन फैशिल्टीज फार द हेयरिंग हैन्डीकैप्ट इन उत्तर प्रदेश, अप्रकाशित एम एड लघु शोध ग्रंथ, अलीयावर जंग नेशनल इंस्टीटयूट फार द हेयरिंग हैन्डीकैटड, बाम्बे।
- ऊषा आर ए (1981) – ए स्टडी ऑफ द प्राबलमस रिलेटेड टु एजुकेशन ऑफ द फिजिकली डिस्टबिल्ड चिल्ड्रेन इन कर्नाटक इंस्टीटयूट फार सोशल एंड इकोनामिक चेंज, शिक्षा में पी एच डी बैंगलोर विश्वविद्यालय, बुक एम बी, थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली : एन सी ई आर टी।
- परशुराम, काला (2006), ''कारक जो प्रभावित करते हैं – शिक्षक के दृष्टिकोण निशक्तता एवं समावेशी शिक्षा के प्रति मुम्बई, भारत में ''डिसएबिलिटी एंड सोसायटी, वोल्यूम 21, पृ सं 231–242।

- शर्मा, उमेश, मोरी, डेनिस, सोनवालेब, संजीव (2009) – ''दृष्टिकोण और चिंताओं के पूर्व सेवा शिक्षकों के साथ संबंध में छात्रों को शामिल करने की असमर्थता को नियमित स्कूलों में पुणे'' एशिया पेसिफिक जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, वोल्यूम 37, पृ सं 319–331।
- स्मिथा, एन. आर. एवं आचार्य, सुजाता (2010)– ''विशिष्ट बालकों की शिक्षा के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण''।
- चिनारा, डी बी (2002), ''इफेक्ट ऑफ स्ट्रेटिज फोर इनकेलक्यूलेट ऑफ ए डेमोक्रेटि वेल्यूज अमंग एडोल्सेन्ट्स इन रिलेशन टू इन्ट्रोवर्शन एक्सट्रोवर्शन एंड वेल्यू रिलेटेड बिहेवेरियल टाइटस, पी एच डी इन एजूकेशन, पंजाब यूनिवर्सिटी।
- जयंती एंड अग्रवाल, रीना (2015) – रिलेशनशिप बिटविन टीचर वेल्यूज एंड सोशोइमोशनल कलाइमेंट ऑफ दा क्लासरूम'', जनरल ऑफ इंडियन एज्यूकेशनल वोल्यूम 32(2), अगस्त 2006, एन सी ई आर टी पेज 106–114।
- दीवान दिनेश कुमार (2001) – ए स्टडी ऑफ द प्रेडिक्टर्स ऑफ एकेडिमिक एचीवमेंट ऑफ स्टूडेंट टीचर्स इन टमर्स ऑफ एप्टीटयूड पार्टीसिपेशन एंड वेल्यूज'' पी एच डी एजूकेशन महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय।
- पोखरना, राजमती (2008) – ''राजस्थान की अनुसूचित जनजाति एवं गैर अनुसूचित जन जाति के किशोरों की स्वधारणा, नैतिक मूल्य, रूचि आकांक्षा स्तर एवं भग्नाशा का अध्ययन'', पी एच डी इन एज्यूकेशन, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
- विजयलक्ष्मी जी (2012) – ''टीचर्स परसेप्शन ऑफ स्कूल चिल्ड्रन वेल्यूज'', इंडियन एजूकेशनल वोल्यूम 5 (1–2) जनवरी 2005, एन सी ई आर टी।
- शर्मा, मीनू (1999) ए स्टडी ऑफ टीचर्स सोसियो–इकोनामिक स्टेटस एंड वेल्यूज विथ रिफरेंस टू देयर एटीटयूढ टूवर्डस द नेशन'', पी एच डी एजूकेशन, आगरा विश्वविद्यालय।

- शर्मा, डी डी (1997) ''डिफरेन्शियल वेल्यूज ऑफ स्टूडेंटस एंड टीचर्स'' – एज ए फ्रंकशन ऑफ वेरियस सोशल फैक्टर्स, पी एच डी इन साइकोलोजी, जोधपुर विश्वविद्यालय थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एम बी बुच।
- सिंह एल सी (2009) – इफेक्टिवनेस ऑफ वेल्यू क्लेरिफाइंग स्ट्रेटेजीज इन वैल्यू ओरिएन्टेशन आफॅ बी एड स्टूडेंटस'' नेशनल काउंसिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग एंड इंडिपेडेंट स्टडी।
- सिंह रंजना (2000) ''रोल स्टेरेस एंड रोल ऑफ मोरल वेल्यूज इनकोपरिंग स्टेरेस अमंग वुमेन टीचर्स'', एम एड मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
- सिंह भावना (2010) विकलांग बालकों के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में व्यक्तित्व, मूल्यों, शिक्षण अभिक्षमता और कृत्य संतोष का अध्ययन, डी फिल शिक्षा शास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- मीणा, वीरेन्द्र (2011) अजमेर एवं उदयपुर जिले के उच्च प्रारम्भिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा वातावरण की संस्थिति का तुलनात्मक अध्ययन, एम एड महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।
- पांडे, त्यागी, पूजा एम एम रजनिश, (2011), इनक्लूसिव एजूकेशन फार डिस्एबल्ड चाइल्ड इन इंडिया। लेख – एन सी ई आर टी नई दिल्ली।
- अखिलेश पाठक (2016) – ''सुगम्य भारत अभियान : निर्बाध वातावरण और सशक्तिकरण की राह'' योजना मई 2016
- मल्होत्रा, अचल (2016) – समावेशी विकास और दूरगामी परिणाम का राजनय, तरक्की भारत की, वैश्विक परिदृश्य, योजना, जून 2016
- सू डेसमंड हैलमेन (2016), (बिल गेट्स की सीईओ) ''भारत में कुपोषण'' द टाइम्स आफॅ इंडिया, करेंट अफेयर्स, 07–10–2016

- राव इंदुमति (2015)– विकलांगजन : शैक्षिक अधिकार व अवसरों का उन्नयन'' कुरूक्षेत्र, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार मई 2015
- एन. सी. ई. आर. टी. (2005) – राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की 2005 एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली
- भारत सरकार (2002) सर्व शिक्षा अभियान– भारत में सर्वसुलभ प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम, मानव संसाधन मंत्रालय, प्रारंभिक शिक्षा एवं साक्षरता विभाग।
- राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम – 2010
- निःशुल्क व्यक्ति समान अवसर, अधिकार संरक्षण और पूर्ण भागीदारी अधिनियम 1995
- राष्ट्रीय विकलांग जन जाति, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय सं 3–1/1993. डी. डी III भारत सरकार।
- शिविरा पत्रिका जनवरी 2012, शिक्षा का अधिकार विशेषांक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान।
- राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका अजमेर–शिक्षा का अधिकार ''निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधियिम 2009''
- विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा एवं विकास कार्यक्रम मार्ग दर्शिका, लोक जुम्बिश परिषद् जयपुर।

पुस्तक

अस्थाना, विपिन ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'' आगरा, विनोद पुस्तक मदिर, 2013

पाण्डेय, रामशक्ल ''शैक्षिक मनोविज्ञान'' मेरठ, आर लाल बुक डिपो, 2012

राय, पारसनाथ ''अनुसंधान परिचय'' आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 1993

ओड़, लक्ष्मीलाल के ''शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि'', जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1973

तोमर, देवेन्द्र पाल सिंह ''सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी विश्वभारती पब्लिकेशन्स, 2005

एनसाइक्लोपीडिया

वाल्डविन, जैम्स एम एनसाइकलोपीडिया ऑफ फिलासफी एण्ड साइकोलोजी, कॉस्मो पब्लिकेशन्स, 1986

जे एस राजपूत एनसाइकलोपीडिया ऑफ इंडियन एजयूकेशन'' वोल्यूम 1 (ए–के) प्रथम संस्करण, एन. सी. ई. आर. टी. अप्रेल 2004

परिभाषा कोष

विशेष समूह विद्यार्थी शिक्षा कोष, विद्यार्थी प्रकाशन 2014

मानव संसाधन विकास : शिक्षा परिभाषा कोश खंड–II

मंत्रालय (शिक्षा विभाग) वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार, 2011

रावत, हरिकृष्ण समाजशास्त्र कोष, अवधारणायें, खंड प्रथम, जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स, 2015

रिसर्च सर्वे

बुच, एम. बी. –सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन, 3–7 वॉल्यूम

एन. सी. ई. आर. टी. –इंडियन एज्यूकेशनल, इश्यू–5, वॉल्यूम 92 जुलाई 1998

एन. सी. ई. आर. टी. –इंडियन एज्यूकेशन एब्सट्रेक्टस, इश्यू 8 Vol. 1 जुलाई 1998

एन. सी. ई. आर. टी. – इंडियन एज्यूकेशन एब्सट्रेक्टस, Vol. 14(2) जनवरी 2002

एन. सी. ई. आर. टी. इंडियन एज्यूकेशन एब्सट्रेक्टस, Vol. 5(1–2), जनवरी, 2005

एन. सी. ई. आर. टी. – इंडियन एज्यूकेशन एब्सट्रेक्टस, इश्यू 8 Vol. 7(1)

सितंबर 2007

शिक्षा विभाग, बीकानेर राजस्थान में शिक्षानुसंधान, सम्प्राप्तियां एवं संभावनाएं/2, 1989

भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका : Vol. 12, जुलाई 2006

पत्र पत्रिकाएं

1 भारतीय आधुनिक शिक्षा

2 प्रारम्भिक शिक्षक

3 इंडियन एज्यूकेशनल रिव्यू

4 जर्नल ऑफ इंडियन एज्युकेशन

5 इंडियन एज्युकेशनल एब्सट्रेक्टस

6 राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका

7 एज्युट्रेक शोध पत्रिका/लेख

8 जरनल ऑफ टिचर एजूकेशन इन डवलपिंग नेशन

Web sites
www.webstar.edu
www.google.com
www.earthlink.net
www.education.nic.in
www.education.guardian.co.uk.
www.nuepa.org.
www.ncte.ac.in
www.rajshiksha.org.

9/3/17

Signature of the Candidate with date
शोधार्थी के हस्ताक्षर मय दिनांक

Outline Approved
स्वीकृत रूपरेखा

Dr. Ashok Saxena

9.3.17

Name and Signature of supervisor with date and seal.